आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज पर आरति शतक

आरति विद्या

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के संघस्थ शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

विद्यासुव्रत संघ

सागर (म. प्र.)

- **कृति** : आरति विद्या
- **आशीर्वाद** : आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
- **रचयिता** : मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
- **प्रसंग** : पावन वर्षायोग २०१८
- **संयोजन** : बा. ब्र. संजय भैया जी मुरैना
- **संस्करण** : द्वितीय, २०१८
- **आवृत्ति** : ११०० प्रतियाँ
- **लागत मूल्य** : १५/- (पुनः प्रकाश हेतु)
- **पुण्यार्जक एवं प्राप्ति स्थान**

घी से भी कई रोगों का उपचार होता है। घी का काजल आँजने से आँखों की ज्योति बढ़ती है। पुराने घी को छाती पर मलने से खाँशी-जुकाम, तलबों में मलने से बुखार, माथे पर मलने से सिर दर्द तुरन्त ठीक हो जाता है।

जलते हुए दीपक के माध्यम से घी की ऊर्जा शक्ति प्राणवायु के साथ शरीर में प्रविष्ट होती है और शरीर में स्फूर्ति-निरोगता आती है उससे निकलने वाला धुआँ आँखों की ज्योति बढ़ाता है।

मनुष्य सतत् ऊर्जा को प्राप्त हो, इसलिए हमारे पूर्वाचार्यों ने आरति करने का विधान किया होगा। आरति करने के बहाने वह देवाराधना, संकल्प शक्ति वृद्धि के साथ महान् ऊर्जा को भी उपलब्ध हो जायेगा। दीपक को वातावरण में जितना अधिक घुमायेंगे, उछालेंगे, उतनी अधिक ऊर्जा उत्सर्जित और विस्तरित होगी।

आरति करते समय सावधानी

१. दीपक में घी इतना डालें कि वह दीपक आरति करते समय तक जलता रहे। बाद में अधिक देर तक दीपक न जलायें।

२. आरति विवेक पूर्वक करना चाहिए। कुछ तथाकथित लोग आरति करने में घोर हिंसा मानते हैं और विकल्प स्वरूप झालरी के छोटे-छोटे बल्ब एवं टार्च से आरति करते हैं। उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि टार्च के सैल के निर्माण में क्या जीव हिंसा नहीं होती। घृत का जलाया हुआ दीपक ही आरति कहलाता है। यदि भोजन में मक्खी गिर जाती है तो भोजन का हमेशा के लिए त्याग नहीं किया जाता है। बल्कि विवेकपूर्वक भोजन रखा जाता है। जिसमें उसमें मक्खी न गिरे। आगम की आज्ञा का हमें लोप करने का कोई अधिकार नहीं है।

— प्रकाशक

अनुक्रम

क्र.	तर्ज	पृ. क्र.
१	इहविधि मंगल आरति कीजे ..	११
२.	.....	१२
३.	जीवन है पानी की बूँद..	१३
४.	करें भगत हो आरति	१४
५.	रात मुनि सपने में आये	१५
६.	हम वफा करके भी तन्हा ...	१६
७.	हम तो चले आए...	१७
८.	.....	१८
९.	भक्ति बेकरार	१९
१०.	इतनी शक्ति हमें देना दाता ...	२०
११.	सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने ...	२१
१२.	केशरिया-केशरिया ... आज हमारो रँग केशरिया ...	२२
१३	गुरुवर हमको दीजिए, जनम जनम का साथ ...	२३
१४	पाना नहीं जीवन को बदलना है साधना...	२४
१५.	मुझे लागी रे गुरु संग प्रीत दुनियाँ क्या जाने ..	२५
१६.	गुरु की छाया में शरण जो पा गया...	२६
१७.	.....	२७
१८.	तुमसे लागी लगन....	२८
१९.	रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा...	२९
२०.	छोटा-सा मन्दिर बनाएँगे-वीर गुण गाएँगे..	३०
२१.	.....	३१
२२.	गुरुवर आज मेरी कुटिया में आए हैं..	३२
२३.	.....	३३
२४.	रामजी की निकली सवारी...	३४

७८.	सोते सोते में निकर गई, सारी	८८
७९.	काट लेओ कर्मन के फंदा-इतइँ आके ..	८९
८०.	नन्हीं-नन्हीं कलियाँ, नन्हों सो बगीचा ...	९०
८१.	मोरे रामलखन से वनराया ...	९१
८२.	वरदान तुमसे ..	९२
८३.	गुण रत्नाकर, विद्यासागर ...	९३
८४.	यशोमति मैय्या से बोले..	९४
८५.	तेरे चरणों की धूलि बाबा ..	९५
८६.	शांति विधान स्थापनावत/नागिन वत..	९६
८७.	जंगल-जंगल बात चली है, पता चला है..	९७
८८.	तेरे पाँच हुये कल्याण प्रभो ..	९८
८९.	कभी आदि बनके...	९९
९०.	डाण्डिया/गर्वा तर्ज पर..	१००
९१.	कितना प्यारा तेरा द्वारा..	१०१
९२.	अपनी पनाह में हमें रखना ..	१०२
९३.	करुणा के भण्डार हमारे महावीरा ..	१०३
९४.	मंत्र जपो नवकार रे मनवा..	१०४
९५.	तुम तो बने वीतरागी...	१०५
९६.	जब कोई नहीं आता...	१०६
९७.	अँखियाँ बंद करूँ या खोलूँ...	१०७
९८.	मैं चन्दन बनकर तेरे	१०८
९९.	भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली	१०९
१००.	कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...	११०
१०१.	हरिभज लो...	१११
१०२.	हे गुरुवर ! धन्य हो तुम कितना..	११२

समर्पण

गुरुदेव नाम है प्यारा
है सबका यही सहारा
श्री गुरुदेव की करो अर्चना - खुले मोक्ष का द्वारा।
नमें श्री गुरुदेव को,
भजें श्री गुरुदेव को,
जपें श्री गुरुदेव को,
गहें श्री गुरुदेव को,
सदा ध्यावें ऽऽऽ श्री गुरुदेव को,

मन मन्दिर में आओ, भगवन् सम वस जाओ ।
हम शरणा रहें तुम्हारी, तुम हमको मोक्ष दिलाओ॥
णमो ... णमो...

(लय : मंगलाष्टकवत्)

श्री अर्हन्त समान नायक सुधी, होना तुम्हें सिद्ध हो।
हो आचार्य गणी दिये पथ यहाँ, पाठी उपाध्याय हो ॥
ध्याते आतम साधु हो शिव पथी, ज्ञानीश विद्या गुरो ।
सो पाँचों परमेष्ठि पूज्य गुरु में, ध्याते सभी भक्त हो ॥

3.

महा आरति गुरु की करने, भाव बनाये रे। [२]
थाली भर थाली - हाँ .. हाँ .. थाली भर थाली
हम दीप जलाये रे। महा आरति गुरु की .....

गुरुवर का सच्चा द्वारा, सबसे अच्छा है न्यारा। [२]
बड़भागी शरणा पाते, गुण गाता है जग सारा॥ [२]
चरणों में माथा - (हाँ .. हाँ ..)[२] हम सदा झुकाये रे। महा...

धर्म ध्वजा तुम फहराते,संत शिरोमणि कहलाते। [२]
शिष्य ज्ञानसागर के हो, हम सबको गुरु तुम भाते॥[२]
विद्या के सागर - (हाँ .. हाँ ..)[२] शिव राह दिखाये रे। महा...

ज्ञानी तुमको ज्ञान कहें, ध्यानी तुमको ध्यान कहें।[२]
नाम आपके लाखों हैं, भक्त तुम्हें भगवान कहें ॥[२]
गुरुवर के दर्शन - (हाँ .. हाँ ..)[२] सुख शान्ति दिलाये रे। महा...

दया दयोदय के दाता, भाग्योदय के निर्माता।[२]
सिद्धोदय सर्वोदय दे, गाते ज्ञानोदय गाथा॥[२]
करुणा के दाता - (हाँ .. हाँ ..)[२] दुख दूर भगाये रे। महा...

हमको कुछ भी ज्ञान नहीं, अण्टी में कुछ दाम नहीं। - २
फिर भी आशा से आये, दे दो अब मुस्कान धनीं॥ - २
भक्तों के स्वामी - (हाँ .. हाँ ..)[२] किरपा बरसाये रे। महा...

(तर्ज : जीवन है पानी की बूँद ....)

4.

जय-जय गुरु की बोले के, करो आरतिया। [२]
आरतिया ऽ ऽ ऽ .... ।, आरतिया ऽ ऽ ऽ ....॥ [२]
अँखियाँ मन की खोल के, करो आरतिया॥ जय-जय ...

गुरुवर हमरे मात-पिता पालक स्वामी। [२]
सभी तीर्थ हैं गुरु चरणों में कल्याणी॥ [२]
विद्या गुरु हैं नाथ मोक्ष के सारथिया। अँखियाँ .....

सूरज जैसा तेज चाँद से शीतल हैं। [२]
हीरे से मजबूत मोम से कोमल हैं॥ [२]
हरते सबके पीर, गुणों के पारखिया। अँखियाँ .....

ज्ञानी के गुरुज्ञान ध्यान ध्यानी सच्चे। [२]
भक्तों के भगवान सुखों के हैं गुच्छे॥ [२]
हम सबके आधार, आतमा के रसिया। अँखियाँ .....

हृदय-दीप में भक्ति जोत श्रद्धा लायें। [२]
टूटे-फूटे सुर छन्दो में गुण गायें॥ [२]
सुनलो अरज पुकार - पुकारें भारतिया। अँखियाँ .....

मुँह माँगा वरदान मिला श्रद्धालू को। [२]
मेरी ओर निहारो आप दयालू हो॥ [२]
दे दीजे मुस्कान, पूर्ण हो आरतिया। [२]
अँखियाँ मन की खोले के करो आरतिया ॥
आरतिया ऽ ऽ ऽ .... ।, आरतिया ऽ ऽ ऽ .... ॥

(तर्ज : करें भगत हो आरति ....)

7.

तुम भी करो हम भी करें, गुरुवर की आरति। [२]
श्री विद्यासागर जी शिवपुर के सारथी॥ [२]

आओ ! आओ ! हिल-मिल के, हम भी पूजें चरणा। [२]
चारों धामों के तीरथ, गुरुवर की शरणा॥ [२]
तुम भी गीत गाओ रे, हम भी गीत गायें। [२]
गुरुवर की किरपा, भव-सागर से तारती॥ [२]
तुम भी ..... ॥

चंदा ने चम - चम ये थालियाँ सजायीं। [२]
सूरज ने झिल-मिल ये किरणें भिजायीं॥ [२]
तुम भी दीप ले लो रे, हम भी दीप ले लें।[२]
दीपों की ज्योति भी, इनको निहारती॥ [२]
तुम भी ..... ॥

सुर - इन्द्र गुरुवर के, दर्शन को तरसें।[२]
हम भी करके आरति, मन ही मन हरषें॥[२]
जाने ना सुर छन्द, भक्ति ना जानें।[२]
फिर भी गुरु चरणों में, झुकते हम भारती॥[२]
तुम भी ..... ॥

(तर्ज : हम तो चले आए...)

8.

आओ ! रे आओ-२, गुरुवर की आरति गाओ रे !
आओ ! रे आओ .....[२]

गुरुवर के दर्शन हमको मिले हैं।
दर्शन से मुरझाए चेहरे खिले हैं॥ [२]
पूजन कर किस्मत जगाओ रे !
आओ! रे आओ .....[२]

गुरुवर का द्वारा सबसे है न्यारा।
चरणों में है ज्ञानामृत का भण्डारा॥ [२]
शरणा से जीवन सजाओ रे !,
आओ ! रे आओ .....[२]

गुरुवर की कृपा होली दिवाली।
गुरुवर के मन्त्रों से पाओ खुशहाली॥ [२]
भक्ति में भक्तो रम जाओ रे!
आओ ! रे आओ .....[२]

भक्ति से मन को मन्दिर बना के।
शक्ति से तन को अपने तपा के॥ [२]
आतम की ज्योति जलाओ रे !
आओ ! रे आओ .....[२]
गुरुवर की आरति गाओ रे !
आओ ! रे आओ .....[२]

(तर्ज : .....)

11.

जय गुरु, जय गुरु, गूँज से, गूँजे सकल जहान्।
गुरु के चरणा पूज के[२], हम भी बनें महान् ॥

दीपक जला के प्रेम के, गाके बजा के बाज।
सद्गुरु तुम्हारी आरति, सबने उतारी आज॥
(मूलपद) दीपक .....
सद्गुरु तुम्हारे ज्ञान का, जब से मिला प्रकाश।[२]
तब से अँधेरा मोह का, होता रहा विनाश॥[२]
सूरज समा के दीप में,[२], आया धरा पै आज।
सद्गुरु .....
सद्गुरु तुम्हारे ध्यान से, तीरथ बनी जमीन।[२]
चरणों को छू वसुन्धरा, पावन बनी कुलीन॥ [२]
चंदा तुम्हारे दर्श को,[२] थाली बना है आज।
सद्गुरु .....
सद्गुरु तुम्हारी साधना, करती बडे कमाल।[२]
भक्तों के छोटे दिल बसे, सबको करे निहाल॥[२]
दुखियों को तेरे साथ से[२], सुख का मिले जहाज।
सद्गुरु तुम्हारी आरति, सबने उतारी आज॥

जय गुरु, जय गुरु, गूँज से, गूँजे सकल जहान।
गुरु के चरणा पूज के[२], हम भी बनें महान्॥

(तर्ज : सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने ....)

12.

[आरतिया ऽ ऽ, आरतिया ऽ ऽ,][२] आज उतारें हम आरतिया ।
गुरु -आरतिया, मुनि-आरतिया[२] आज उतारें हम आरतिया ॥
आरतिया ..... आरतिया .....

विद्यासागर गुरु हमारे।[२]
ज्ञान सिन्धु के शिष्य निराले।
भक्तों के शिव सारथिया-सारथिया॥
आज उतारें हम आरतिया॥ आरतिया.....

महाव्रती रत्नत्रयधारी।[२]
नगन निरम्बर पिच्छीधारी।
निज आतम के गुरु रसिया- गुरु रसिया॥
आज उतारें हम आरतिया॥ आरतिया.....

तुमसे इत्र महकना सीखे।[२]
सूरज चाँद चमकना सीखें।
हम सीखें जिन भारतिया - भारतिया॥
आज उतारें हम आरतिया॥ आरतिया .....

भक्त हजारों तुमने तारें।[२]
हम भी आये द्वार तिहारे।
पार मिले भव सागरिया-सागरिया॥
आज उतारें हम आरतिया॥ आरतिया.....
गुरु - आरतिया, मुनि-आरतिया -

(तर्ज : केशरिया-केशरिया ... आज हमारो रंग केशरिया ...)

15.

हम करें आरति आज, मंगल होवेगा।
होवेगा............. होवेगा...........॥ [२]

हम करें .....

विद्यासागर गुरुवर साँचे। [२]
दर्शन से मन - मोरा नाँचे॥ [२]
सब झूमे भक्त समाज-मंगल होवेगा॥

होवेगा .....

बाजे झालर घण्टी ताली। [२]
भक्त मनायें आज दिवाली॥ [२]
अब मिले राम सरताज-मंगल होवेगा॥

होवेगा .....

बनें सीप हम गुरु - पद मोती। [२]
जले हृदय में गुरु की ज्योति॥ [२]
अब होंगे पूरे काज-मंगल होवेगा॥

होवेगा .....

संयम पालो करो साधना। [२]
दया धर्म की करो गर्जना॥ [२]
हो! तारणतरण, जहाज-मंगल होवेगा॥

होवेगा ..... होवेगा .....
हम करें आरति आज-मंगल होवेगा

(तर्ज : मुझे लागी रे गुरु संग प्रीत, दुनियाँ क्या जाने.....)

16.

गुरु की आरति करने जो भी आ गये। [२]
उनके जीवन में उजाले छा गये॥ [२]

गुरु हमें, लगते सदा जिन -ईश हैं। [२]
भक्तों ने गुरु को नवाये शीश हैं॥ [२]
विद्या-गुरु के पद जिन्हें भी भा गये। [२]

उनके जीवन .....

दीये यहाँ तो जला ले कोई भी। [२]
ज्योति अन्तर की जलाते कोई ही॥ [२]
जो जलाने ज्योति गुरु को पा गये। [२]

उनके जीवन .....

क्या कभी ? जुगनू अँधेरा हर सके। [२]
क्या कभी दीये सवेरा कर सके॥ [२]
किन्तु श्रद्धा - दीप, तम जो खा गये। [२]

उनके जीवन .....

गुरु - कृपा की जब हुयी बरसात है। [२]
दिन दशहरा है दिवाली रात है॥ [२]
रोज बादल फिर खुशी के छा गये। [२]
उनके जीवन में उजाले छा गये।

(तर्ज : गुरु की छाया में शरण जो पा गया...)

19.

विद्या गुरु की आज, हमने आरति उतारी।
किए कृपा गुरुदेव, हमरी किस्मत भी सँवारी॥ [२]

सूरज चंदा तारे देखे, देखे दीप उजाले।
ताप-आँच दे सदा न रहते, फिर भी पुजने वाले॥ [२]
विद्या-ज्ञान-ज्योति की जग में, अद्‌भुत महिमा न्यारी -
विद्यागुरु.....

हमें बना दो तुम ज्योतिर्मय, यह न हमारी आशा। [२]
मोह-अमावश बस हर लीजे, हमें बना लो दासा॥
चरण-शरण शिव धाम तुम्हारे, करुणा मोक्ष सवारी-
विद्यागुरु.....

अंधों की लाठी बन जायें, पथ के शूल हटाएँ। [२]
नहीं किसी पर भार बनें, घावों पर दवा लगाएँ॥
यही रोशनी हमें दिला दो, झोली आज पसारी
विद्यागुरु.....

हमने जिसको अपना माना, वही हमें ठुकराये। [२]
हमने जिसको गले लगाया, हमको वही जलाये॥
फिर भी आँसू पोंछ सकें हम- अपनी यही दिवारी
विद्यागुरु.....

विद्यागुरु की आज .....

(तर्ज : रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा...)

20.

गुरुवर को माथा झुकाएँगे, आरतिया गाएँगे।
आरतिया गाएँगे ....., खुशियाँ मनाएँगे॥
गुरुवर को ....
भक्ति के दीपक हाथों में लेकर-हाथों में लेकर,
हाँ-हाँ, हाथों..[२]
चरणों की महिमा सुनाएँगे, पूजा रचाएँगे[२]
गुरुवर को .....
सुज्ञान सूरज विद्या गुरुजी - विद्या गुरुजी-
हाँ-हाँ, विद्यागुरुजी..[२]
हमको भी ज्ञान दिलाएँगे - अघ-तम नशाएँगे[२]
गुरुवर को .....
जिसने भी जीवन गुरुवर को सौंपा, गुरुवर को सौंपा-
हाँ-हाँ..
उसके गुरु पाप नशाएँगे - मोक्ष घुमाएँगे[२]
गुरुवर को .....
गुरु भक्तों की अर्जी ये सुनके, अर्जी ये सुनके-
हाँ-हाँ ..[२]
गुरुवर जी मन्द मुस्काएँगे मन में समाएँगे[२]
गुरुवर को माथा झुकाएँगे - आरतिया गाएँगे।

(तर्ज : छोटा-सा मन्दिर बनाएँगे - वीर गुण गाएँगे....)

23.

चल रे! गुरु-दर्शन को,
चल रे! गुरु-दर्शन को,
विद्यागुरु की आरति करके, पावन कर तन-मन को॥]२
चल रे ! गुरु-दर्शन .....]

हमने सारी दुनियाँ देखी, गुरुवर सा ना देखा।[२]
तभी शीघ्र गुरुके चरणों में, माथा अपना टेका॥[२]
आओ गुरु के गुण गा लें हम[२], तजकर निजी अहम् को।
चल रे! गुरु-दर्शन .....

कभी नहीं ये नजर उठाते, पर भर देते झोली।[२]
बड़ी निराली हुनर गुरु की, करें दिवाली होली॥ [२]
कभी दवाई ना देते पर,[२] स्वस्थ करें चेतन को।
चल रे! गुरु-दर्शन .....

बड़े निराले विद्या गुरुवर, भाग्य सजा दें अपना।[२]
गुरु की महिमा गाकर देखो, पूरा होगा सपना॥[२]
कभी दिखाई ना देंगे पर,[२] दूर न होंगे क्षण को।
चल रे! गुरु-दर्शन .....

ऐसा दीप जलाते गुरुवर, जिसमें धुआँ न बाती।[२]
आँधी तूफाँ बुझा न सकते, जोत जले दिन राती॥[२]
मन-मंदिर में भरे उजाला,[२] दूर करें अघ - तम को।

(तर्ज : ....)

24.

बगल में पिच्छी, हाथ में कमण्डल,रूप है निरम्बर,भावना है मंगल।
हम दास गुरु के, गुरु अपने स्वामी। अपनाओ हमको, हे जग कल्याणी!॥
दर्शन पायें, पूजा - रचायें। गुरुवर हमको अब स्वीकारो॥
गुरुवर की आरति उतारो, सब मिल के चरणा पखारो।
हृदय के दीपक में श्रद्धा की ज्योति से,[२] गुरुवर की मूरत निहारो॥

दक्षिण को त्यागा उत्तर को आये।
सुज्ञान सागर से दीक्षा को पाये॥[२]
गुरुवर की आज्ञा से गुरुकुल सजाये।
अपनी तपस्या से जग को चमकाये॥
जिनने पुकारा उनको सँभाला[२]
भक्तों की नैय्या भव पार-उतारो॥ गुरुवर ....
भटकों को तुम ही तो राह दिखाये।
दुखियों का दुख तो तुम ही भगाये॥[२]
अज्ञानी जन को ज्ञान दिया है।
याचक को मुँह माँगा दान दिया है॥
धर्मी को दीना, तीरथ नवीना[२]
मन मन्दिर में भक्तों के अब तो पधारो॥ गुरुवर ....
चिंता नहीं क्या तुमको हमारी।
पटरी पै ला दो भक्तों की गाड़ी॥[२]
रातें हटा दो दुखयारी काली,
रत्नों से भर दो ये झोली खाली,
हर लो अँधेरे, कर दो सबेरे[२]
संयम से हमको भी अब सँवारो॥ गुरुवर....

(तर्ज : रामजी की निकली सवारी....)

27.

विद्यागुरुवर न्यारे, चलते सुख को वरने।
हम चरणों में आये, गुरु की आरति करने॥

गुरु -प्राण-प्राण में है, गुरु -श्वास हमारे हैं।
गुरुवर अपने स्वामी, हम दास तुम्हारे हैं॥ २ हम दास ...
अज्ञान मिटा दो तुम, भव सागर से तिरने।२
हम चरणों .....

गुरु-ज्योति पुँज चमके, हम दीप दिखायें क्या ?
जुगनू भी नहीं हम तो, फिर भी गुण गायें आ॥ २ फिर भी....
आतम की ज्योति जले, पापों का तम हरने२
हम चरणों .....

न ही दीप जलाना है, न ही मणियाँ पाना है।
बस राह मिले साँची, सो गुरु-गुण गाना है॥ २ सो गुरु.....
अब कृपा करो गुरुजी दे डालो सुख झरने।२
हम चरणों .....

तुम सूरज से चमको, सब दूर अँधेरे हों।
हम तो इक किरण बनें, नित साथ हि तेरे हों॥ २ नित साथ..
इच्छा बस इतनी सी, भव-भव बन्धन हरने।२
हम चरणों .....

(तर्ज : संसार है इक नदिया .....)

28.

जगमग-जगमग सी जोत अब, मन की जलाने को।
हम करते हैं गुरु आरति, गुरु को मनाने को॥ २

खुद को हमने खुद ही रक्खा अँधेरे में भाई।
कंचन सी अपनी आतमा कचरे में है भाई॥ २
ज्योति से ज्योति ज्ञान की, अपनी जलाने को।
हम करते हैं गुरु आरति । .....

कितने अपने गुजरे, मिले सौभाग्य से जीवन।
नर तन का हीरा पाए के, करना है अब पावन॥ २
धड़कन में, मन में, प्राण में, गुरु को बसाने को।
हम करते हैं गुरु आरति । .....

करुणा रहे गुरु की मिले, कृपा चरण छाया।
गुरु की देशना पाके, तजें हम मोह तम माया॥ २
व्याकुल हैं सारे भक्त, गुरु मुस्कान पाने को।
हम करते हैं गुरु आरति, गुरु को मनाने को॥
जगमग-जगमग सी .....

(तर्ज : सजधज कर जिस दिन मौत की ....)

31.

दीये जले चारों ओर रे[२] ।
हम सब उतारें गुरुवर की आरति-दीये जले .....

चमके थाली सोने जैसी, रत्नों जैसे दिये सजे।[२]
जगमग-जगमग जोत जली जा, विद्यागुरु के चरण भजे॥[२]
भक्ति की उठ रइ हिलोर रे[२]। हम सब उतारें .....

चलते-फिरते तीरथ तुम हो, जय! जयवन्त धरम तुम हो।
भव-सागर के तीर तुम्हीं हो, जिन-भगवन्त परम तुम हो॥[२]
तुम हो भव-कानन के छोर रे[२]। हम सब उतारें .....

आप अनाथों के हो स्वामी, कहलाते हो निर्मोही। [२]
धीर-वीर गंभीर शूर हो, उत्कर्षों के आरोही॥ [२]
भावों से करते विभोर रे[२]। हम सब उतारें .....

गरज नहीं, हो साथी दुनियाँ, गुरु चरणों में माथ रहे।[२]
कृपा तुम्हारी हम पर बरसे, फिर डर की क्या बात रहे ?॥[२]
अब तो सँभालो डोर रे[२]। हम सब उतारें .....

दीये जले चारों आरे रे[२] ।
हम सब उतारें गुरुवर की आरति - दीये जले .....

(तर्ज : नाचे जौ मन कौ मोर रे .....)

32.

माथा टेको गीत गाओ, अर्चना करो।[२]
विद्या गुरु की आरति कर वंदना करो॥[२]
गुरु-रूप अर्हत् जैसा जिन धर्म दाता है।
करुणा का अवतारी ज्ञान ध्यान तप विधाता है॥ [२]
साँचे संत पाके श्रेष्ठ साधना करो।[२]
विद्या गुरु .....
जब से लिया जन्म तो, अँधेरा ही अँधेरा है।
गुरु के चरणा पाये तो सबेरा ही सबेरा है॥ [२]
ज्ञान ज्योति पाने बंधु! मान ना करो।[२]
विद्या गुरु .....
पाप मोह दूर होगा मंजिल, भी मिलेगी यार।
गुरु-आज्ञा पर चलकर देखो जीवन में बस एक बार॥ [२]
वक्त से ना डरकर भागो, सामना करो।[२]
विद्या गुरु .....
सबकी इच्छा पूरी होगी, झोली भर जाएगी।
ऊपर वाली झिलमिल दुनियाँ भूपर उतर आएगी॥ [२]
विश्व कल्याण की बस भावना करो।[२]
विद्या गुरु .....
माथा टेको गीत गाओ, अर्चना करो।[२]
विद्या गुरु की आरति कर वंदना करो॥[२]

(तर्ज : कुण्डलपुर की धूल सिर लगाने)

35.

श्री विद्यागुरुदेव, हमको लगते भगवन्।[२]
हम करते आरति, ज्योतिर्मय हो तन-मन॥[२]

ज्योति से ज्योति गुरुवर हमरी जला दो।[२]
प्रेम की गंगा हमरे मन में बहा दो॥[२]
हर लो अँधेरे,
कर दो सबेरे।[२]
भव - भव के फेरे, हमरे अब नशा दो।
श्री विद्या .....
नन्हें-नन्हें हम हैं गुरुवर भक्त तुम्हारे।[२]
ना सूरज-चन्दा ना हम झिलमिल तारे॥[२]
नन्हें से फूल हम,
चरणों की धूल हम।[२]
मुक्ति के मूल तुम - खोलो हमको द्वारे॥
श्री विद्या .....
कृपा तुम्हारी गुरुवर जिसको मिली है।[२]
वंशी सुकूँ की उसकी बजती भली है॥[२]
हमने पुकारा,
दे दो सहारा।[२]
मुस्कान फुहारा -पाके आतम खिली है॥
श्री विद्या .....

(तर्ज : चले हैं सुकुमाल, देखो मुनि बनके)

36.

विद्या गुरु के दर्शन, मन के हरे अँधेरे।
चरणों की आरति से, होते सदा सबेरे॥

हम दास हैं गुरु के, करते गुरु की पूजा ।
दुनियाँ क्या जाने गुरु को, गुरु सा न जग में दूजा॥
महादेव ब्रह्मा विष्णु, गुरु रूप है ये तेरे।
चरणों .....

हर देश में गुरु हैं, हर भेष में गुरु हैं।
गुरु रूप हैं अनेकों, सन्देश में गुरु हैं॥
दीवाली या दशहरा, सब में गुरु के डेरे।
चरणों .....
सबसे बड़ी कृपा है, गुरुदेव की जगत् में।
गुरु तीर्थ हैं निराले, चरणों में हम भगत हैं॥
मुस्कान-दृष्टि गुरु की, हरती भवों के फेरे।
चरणों .....
विद्या गुरु.....

(तर्ज : मधुवन के मंदिरों में .....)

39.

सूर्य के आगे दीप ये कैसे, दास तिहारे जलाएँ।
फिर भी विद्यापद आरतिया, मन के तिमिर मिटाएँ॥

गुरु तो हमको राह बताते, पाने को सुख साता।
हम तो बात भुलाकर गुरु की, गाते गम की गाथा॥ २
धर्म त्यागने की बीमारी², गुरु के पथ्य नशायें।
सूर्य .....

मन के मंदिर पाके हमने, पावन नहीं बनाये ।
गुरु ने निशि दिन जोत जलायी, पर हम तो भरमाये॥ २
मिटे मोहतम धर्म जोत को², पाने हम ललचायें।
सूर्य .....

आप कृपालू बड़े दयालू, श्रद्धालू हम छोटे।
भूल भुलाकर क्षमा दान दो, काम तजें हम खोटे॥ २
हे गुरुवर ! विद्यासागर जी², ज्ञान के दीप जलाएं।
सूर्य .....

(तर्ज : मैली चादर ओढ़ के कैसे .....)

40.

गुरु चरणों का ध्यान करो रे², करो आरति प्राणी। ²
सुनो गुरु - वाणी ..... गुरु की वाणी।²

गुरुकी महिमा बँध न सकती, शब्द-जाल में पूरी।²
सरस्वती माँ कह नहिं सकती, रहती सदा अधूरी॥²
गुरु चरणों में शीश धरो रे², तजकर अब नादानी।²
सुनो गुरुवाणी .....

गुरुकी महिमा गाने चमकें, सूरज चाँद सितारे।²
हवा चले तरु फलें फूल भी, रंगे महकते न्यारे॥²
रत्नों के घर सिंधु बने रे², वसुन्धरा भी रानी।²
सुनो गुरुवाणी .....

दीप भक्त, गुरु आप रोशनी, तन हम, चेतन तुम हो।²
प्राण जिंदगी धड़कन तुम हो, पंछी हम नभ तुम हो॥²
प्रभु से ज्यादा यहाँ सुनो रे², गुरु की कथा कहानी।²
सुनो गुरुवाणी .....

गुरु चरणों का ध्यान करो रे², करो आरति प्राणी।²
सुनो गुरुवाणी .....

(तर्ज : निशि भोजन का त्याग करो रे पियो .. पियो छान के ..)

43.

गुरु - आरति को दीये जले।[२]
विद्या-गुरुजी लगते भले॥[२]

तुम्हारे बिना दूर क्या हों अँधेरे।[२]
तुम्हारी कृपा से होते सबेरे॥[२]
भक्ति की गंगा, बहती चले।
गुरुआरति .....

भक्ति में झूमे भक्तों की टोली।[२]
पलकें बिछा के पूरें रँगोली॥[२]
गुरु के बिना हमको, दुनियाँ खले।
गुरु आरति .....

सूरज बिना फूल खिलते नहीं।[२]
सागर बिना रत्न मिलते नहीं॥[२]
सूरज भी सागर भी, तुम से पले।
गुरु आरति .....

चंदा सितारों की जाने क्या मंशा।[२]
सूरज तो खुश है करके प्रशंसा॥[२]
मुस्कान से अपनी, दुनियाँ खिले।
गुरु आरति .....

(तर्ज : गुरु वंदना को तरसे नयन .....)

44.

भक्ति की ज्योति जलाए गुरुजी।[२]
आरतिया करने हम आए गुरुजी॥[२]

दक्षिण को छोड़ा फिर उत्तर को आए।
दीक्षित हुये विद्यासागर कहलाए॥ [२]
वैरागी हमको मन भाए गुरुजी।[२]
आरतिया .....

सूरज करोड़ों किरणों के द्वारा।
कर न सके मन में थोड़ा उजाला॥ [२]
हृदय हमारा सजाए गुरु जी।[२]
आरतिया .....

ज्योति में ज्योति रत्नों की ज्योति।
सबसे हटके देखो सुज्ञान ज्योति॥ [२]
अन्दर का मन्दर दिखाये गुरुजी।[२]
आरतिया .....

गुरु-दीप हर लेता जग-रातें काली।
श्रद्धा हो रोशन तो होती दीवाली॥ [२]
गम का अँधेरा नशाए गुरुजी।[२]
आरतिया .....

भक्ति की ज्योति .....

(तर्ज : रखना हमार ख्याल बाबा .....)

47.

दीप जला के हमने गुरु की आरति उतारी। हाँ-हाँ आरति ....
ऐसा दो आलोक, कि घर-घर होवे रोज दिवाली॥ दीप.....

अब तक हमने हे गुरुवर जी, दीपक खूब उजेरे। हाँ-हाँ दीपक ..
जगमग-जगमग किये नजारे, पर ना हुये सबेरे॥ हाँ-हाँ पर ना....
अब ज्योति ऐसी जलवा दो, जो हरे रात अँधियारी।[२] दीप .....

दीप जलें तो झिलमिल-झिलमिल, करें उजालें थोड़े। हाँ-हाँ करें
किन्तु समर्पण से पुजते हैं, अहम्-भाव जब छोड़े॥ हाँ-हाँ अहम्
फिर अर्हम् को जो जन ध्याते, उनकी महिमा न्यारी।[२] दीप ...

अपनी नजरों में तो गुरुवर, आप हि आप समाये। हाँ-हाँ आप ...
दीप-गीत में आप हि दिखते, सो हम शीश झुकाये॥ हाँ-हाँ सो..
इस दीपक से गुरु सूरज की, मूरत फिर भी निहारी।[२] दीप...

अपने जैसा पागल गुरुवर! और न जग में कोई। हाँ-हाँ और....
सूरज को भी दीप दिखाना, रीत ये कैसी होई॥ हाँ-हाँ रीत....
ठुकराओ या अपनाओ पर, दे दो मोक्ष सवारी॥[२] दीप ....

(तर्ज : रोम-रोम से निकले ....)

48.

हे तारण-तरण जहाज,
श्री विद्यागुरु महाराज।
मेरी अन्तर ज्योति जला दो[२],
मैं करूँ आरति आज॥

तेरी एक कृपा कल्याणी, नजर नजारे बदल रही।
पाकर के मुस्कान आपकी, कलियाँ खिलने मचल रहीं॥ [२]
मेरी ओर निहारो स्वामी[२], ओ! मेरे गुरु महाराज। ओ मेरे...
मेरी अन्तर ज्योति .....

तुम्हें गुलामी रास न आयी, आते हुआ देश आजाद।
घर बन्धन भी तुम्हें न भाये, त्याग दिया संसार विवाद॥ [२]
फिर बने निरम्बर स्वामी[२], हम सबके गुरु सिरताज। हम सबके..
मेरी अन्तर ज्योति .....

मेरा जीवन तिनके जैसा, पाप आँधियाँ चारों ओर।
भोगों की है आग भयंकर, ऊपर से चंचल मन मोर॥ [२]
कहीं बालक भटक न जाए[२], तुम रखना मेरी लाज। तुम रखना.
मेरी अन्तर ज्योति .....

आप दयालू बड़े कृपालू, मैं श्रद्धालू गुण गाऊँ।
मैं अनगढ़ हूँ मुझे तराशो, मैं भी मूरत बन जाऊँ॥ [२]
तुम से रोशन है दुनियाँ[२], सब पूजे भक्त समाज॥ सब पूजें ...
मेरी अन्तर ज्योति .....

(तर्ज : मुझे ऐसा वर दे दो गुणगान .....)

51.

सुनो! संसार में गुरु की, अजब महिमा निराली रे! [२]
करो सब आरति गुरु की, दशहरा हो दिवाली रे ॥

महाकल्याण होता है, मिले लौकिक गुरु जिनको। [२]
कहें क्या बात हम उनकी, अलौकिक मिल गये जिनको॥
कथा विद्या सुसागर की, हरे अँधयार काली रे ।
करो सब आरति .....

दिवाकर दीप है दिन का, निशा के चंद्र तारे हैं। [२]
कहें कुलदीप बेटे को, इन्हीं से कुछ उजाले हैं॥
दिया जो ज्ञान-विद्या का, उसी से नित्य लाली रे।
करो सब आरति .....

जला दो दीप गुरु यों जो, बहा दे प्रेम की गंगा। [२]
हरे अँधयार भव मन की, मिटा दे मान मातंगा॥
सभी जन राह पा जायें, न हो कोई मलाली रे।
करो सब आरति .....

सुनो! .....

(तर्ज : दयाकर दान भक्ति का, हमें .....)

52.

जय- जय - जय - जय बोलो।[२]
मन की अँखियाँ खोलो।[२]
करके गुरु की आरति भक्तों, मुक्ति के पट खोलो॥
जय-जय....
बाहर दुनियाँ जग-मग है पर, मन में भरे अँधेरे।[२]
गुरु चरणों में ज्ञान ज्योति के, होते सदा सबेरे॥[२]
गुरुके चरण न तोलो।[२]
मन की अँखियाँ खोलो॥[२] करके .....
करम भूल जा, धरम भूल जा, भूलो ना गुरु-वाणी।[२]
गुरु -कृपा गर मिल जाये तो, राह मिले कल्याणी॥[२]
इधर-उधर न डोलो।[२]
मन की अँखियाँ खोलो।[२] करके .....
बात नहीं जो गुरु की मानें, विफल सकल जग घूमे।[२]
गुरु-आज्ञा में चलकर देखो, तुरत सफलता चूमे॥[२]
निखिल पाप-मल धो लो।[२]
मन की अँखियाँ खोलो।[२] करके .....
उगता सूरज सभी चाहते, ढलता मन नहीं भाता।[२]
लाली ना उजयारा फिर भी, ज्ञान-दीप मन भाता।[२]
अमृत उर में घोलो।[२]
मन की अँखियाँ खोलो।[२]
करके गुरु की आरति भक्तों, मुक्ति के पट खोलो॥
जय .....

(तर्ज : .....)

55.

दीपक ही दीपक जलायेंगे।[२]
विद्या गुरु की आरति हम गायेंगे॥[२]

झिलमिल-झिलमिल चमचम-चमचम थाली ये सजायी।
थाली ये सजायी हाँ-हाँ ज्योति भी जलायी॥ [२]
झूम-झूम भक्ति में इठलायेंगे॥ विद्या गुरु.....

सूरज से क्या लेना, चंदा तारों से क्या लेना।
तारों से क्या लेना, हमको रत्नों से क्या लेना॥ [२]
श्रद्धा के दिए जलाएँगे॥ विद्यागुरु.....

श्रद्धा की ज्योति के आगे दुनियाँ पड़ती फीकी।
दुनियाँ पड़ती फीकी सोचो श्रद्धा ज्योति नीकी॥ [२]
मन मंदिर में गुरु को बिठायेंगे॥ विद्यागुरु.....

गुरुवर जग में दीन-दयाला, पूजित महा विशाल है।
पूजित महा विशाल सुन लो जिनवाणी के लाल हैं॥ [२]
भक्तों की भक्ति से मुस्कायेंगे॥ विद्यागुरु.....

दीपक ही दीपक .....

(तर्ज : पलकें ही पलकें बिछायेंगे जिस दिन .....)

56.

ओम् जय विद्या स्वामी, गुरुवर - जय विद्या स्वामी।
तीर्थंकर से तीरथ, गुरु अन्तर्यामी ॥ ओम् जय .....

विद्यासागर जग में, संयम से महके। गुरुवर-संयम से ....
जो भी करते आरति[२], सूरज से चमके॥ ओम् जय ...

हाथ कमण्डल पिच्छी, रूप निरम्बर है। गुरुवर-रूप ....
भू विस्तर कर तकिया[२], चादर अम्बर है॥ ओम् जय ...

ज्ञान सिंधु के अनुचर, महावीरा नन्दा। गुरुवर-महावीरा ....
वीतरागमय मुद्रा[२], हरते भव फन्दा॥ ओम् जय ...

ज्ञानी ध्यानी त्यागी, तुम हो वैरागी। गुरुवर तुम हो ....
नायक! पालक! रक्षक![२], शिव सुख के रागी॥ ओम् जय...

मेरा क्या सब तेरा, मैं भी तो तेरा। गुरुवर-मैं भी तो ....
कृपा करो मुस्का के[२], हर लो अँधेरा॥ ओम् जय ...

(तर्ज : ओम् जय महावीर प्रभो .....)

59.

जगमग-जगमग ज्योत जलाके करके जय-जयकार।
विद्या गुरु की आरति हम करते बारम्बार॥ २

मात्र उतारें आरति, हम तो गुरु की आज।
किस्मत कैसे सो सकती है, गुरु की सुन आवाज॥ २
झिलमिल साँचे रत्नों का अब पायेंगे भण्डार।
विद्यागुरु.....

श्रद्धा का ये दीपक सह ले सब आँधी भूचाल।
गुरु-कृपा की जो मिल जाये चिमनी बड़ी विशाल॥ २
पद-छाया में हमको रखना दे संयम उपहार।
विद्यागुरु.....

रक्षा-बंधन कभी दशहरा, कभी दिवाली योग।
होली पूनम कभी-कभी ही मिलते शुभ संयोग॥ २
गुरु-पद की मुस्कान कृपा में, जग के सब त्यौहार।
विद्यागुरु.....

जगमग-जगमग ज्योत .....

(तर्ज १ : तीरथ महावीर जी में .....
तर्ज २ : छोटे-छोटे शिष्य हैं पर बड़े होशियार।)

60.

देवा हो देवा जय गुरुदेवा, विद्यागुरु भगवान ।²
हम तो करते आरति गुरुजी, हरो तिमिर अज्ञान॥²
गुरुजी, हरो ....

गुरु की महिमा का क्या कहना, गुरु से बढ़कर कौन है ? हो,गुरु से
गुरु भक्ति में हम नहीं पीछे, हम से बढ़कर कौन है ? हो, हम से..
विद्यागुरु की जय-जय .....²
दर्शन हो दर्शन गुरु दर्शन से, पाते सब वरदान॥ हम तो ..

भक्त सुदामा के चावल भी, अक्षय हो भण्डार रे। हो, अक्षय ..
भाव-भक्ति श्रद्धा अर्पण से, ज्वार बने नग-हार रे॥ हो, ज्वार ..
विद्यागुरु की जय-जय .....²
पूजा हो पूजा गुरु -पूजा से, जग का हो कल्याण ॥ हम तो ..

सूर्य - चाँद तारों की ज्योति, गुरु ज्योति से हीन है। हो, गुरु..
गुरुज्योति आँधी तूफाँ से, नहीं बुझे न मलीन है॥ हो, नहीं ..
विद्यागुरु की जय-जय .....²
सेवा हो सेवा, गुरु सेवा से, भक्त बनें भगवान॥ हम तो ..

गुरु उपकारों की बलिहारी, किससे पूरा गान हो। हो, किससे ..
तब ही गुरु पहले पुजते हैं, बाद पुजे भगवान हो॥ हो, बाद ..
विद्यागुरु की जय-जय .....²
किरपा हो किरपा गुरु किरपा से, पाओ पद निर्वाण॥ हम तो ..

(तर्ज : देवा हो देवा गणपति देवा ....)

63.

मन का अँधेरा नाशने, गुरु - आरति करो।[२]
आतम निधि प्रकाशने - गुरु - आरति करो॥[२]

क्या भाव-भक्ति के सिवा, ये दीप कब जलें ?
गुरु की कृपा से देख लो, अशान्ति तम टलें।[२]
अपनी कमी विनाशने,[२] गुरु-आरति करो।
मन का .....

गुरु-ज्ञान के प्रकाश से, सबका हुआ भला।
गुरु-रूप में जिनेश की, अतिशय छिपी कला॥[२]
हृदय कमल विकासने[२], गुरु-आरति करो।
मन का .....

अपने पराये अँध को, गुरु-दीप ही हरें।
सूरज सितारे चाँद भी, गुरु-अर्चना करें॥[२]
मुक्ति का घर तलाशने,[२] गुरु-आरति करो।
मन का अँधेरा .....

(तर्ज : मन की तरंगे मार ले, बस हो गया भजन .....)

64.

दीप लाए जले, आरति गुरु की हरती अँधेरे।
मन की ज्योति जले,[२] सारी दुनियाँ में होवें उजेरे॥

हम तेल बाती हैं, तुम जोत हो।
भव सिन्धु तिरने को तुम पोत हो।[२]
राह सम्यक मिले,[२] रात संझा हटे हों सवेरे॥
दीप लाये जले .....

हम सूर्य ना चाँद भी हम नहीं।
भक्ति हमारी कभी कम नहीं॥[२]
विद्या-गुरु से मिले,[२] आत्म ज्योति महाशिव वसेरे॥
दीप लाये जले .....

हम फूल से महकें सुरभित करो।
जलें दीप से रोशनी तुम भरो॥[२]
बाग संयम खिले,[२] दूर हों गम उदासी के डेरे॥
दीप लाये जले .....

(तर्ज : गुरु तू न मिला, सारी .....)

67.

विद्या गुरुजी; ज्ञान सूर्य हैं, जग का हरें अँधेरा रे।
आओ कर लो; आरति गुरु की, होगा तभी सबेरा रे॥ [२]

सूरज चंदा तारों से भी, ज्ञान - सूर्य क्यों पूज्य रहा ?
जले-बुझे न कभी किसी का, इससे मुखड़ा सूज रहा॥ [२]
नहीं अमावश, पूनम होती; अतिशय यही उजेरा रे।
आओ .....

सूरज दादा जब आते तो, छिपें चाँद जुगनू सारे।
उल्लू को भी नहीं सुहाये, पक्षी चिल्लाते सारे॥ [२]
सबको प्यारा; विद्या रवि का, हर दिल में हो डेरा रे।
आओ .....

अगर न होती पूर्व दिशा तो; सूर्य चाँद क्या उग पाते ?
सूर्य सुबह में चाँद साँझ में, भक्तों से क्या पुज पाते ? [२]
विद्या-रवि से; सभी दिशायें, पूरब बनी अपूर्वा से॥
आओ .....

विद्या-गुरुजी .....

(तर्ज : कौन सुनेगा ? किसको सुनायें..)

68.

आरति .... हो .... आरति ....।[२]

आरति उतारें हम विद्या - गुरु की।
विद्यागुरु हमको लगते देव पुरु जी॥ [२]
आरति .....

कोई कहे इनको आदि कोई वीरा।
विद्यागुरु सबसे जुदा रहे हीरा॥ [२]
आरति .....

गुरु रूप एकानेक इनमें समाये।
अर्चना के गीत-गान भाव बनाये॥ [२]
आरति .....

चाँदी सोने जैसी हमने थाल सजायी।
दीप लाए बाती लाए जोत जलायी॥ [२]
आरति .....

कृपा मिले आपकी मुस्कान दो हमें।
पाप मोह नाशने सुज्ञान दो हमें॥ [२]
आरति . . . . .हो . . . . आरति . . . .

(तर्ज : पंखिड़ा हो पंखिड़ा ....)

71.

गुरु-आरति हो...गुरु-आरति हो। [२]
दीये जला के, गुरु-आरति हो॥ [२]

विद्यागुरु जी जग में निराले।
सुज्ञान ज्योति से करते उजाले॥ [२]
मन के हमारे अँधेरे हटा दो।
भर दो हृदय में गुरु-भारती को॥
गुरु-आरति .....

गुरुज्ञान ज्योति जिन्होंने भी पाई।
उन्होंने दशहरा-दिवाली मनाई॥ [२]
हम भी दशहरा-दिवाली मनाएँ।
गुरुकी कृपा जब हमें तारती हो।
गुरु-आरति .....

बाती कपूर की जलती रहेगी।
भक्ति हमारी मचलती रहेगी॥ [२]
हर पल तुम्हारी मुस्कान पाएँ।
जगमग गुरु की महा आरति हो॥
गुरु-आरति .....

(तर्ज : हे शारदे माँ ! हे शारदे माँ .....)

72.

जला दो मन के सूने दीप।[२]
हमारे विद्या गुरु जगदीप॥[२]

सूर्य चाँद तारों की ज्योति।
गुरुचरणों से रोशन होती॥ [२]
हमको रखना चरण समीप - हमारे विद्या ...

पाप मोह के अंध जीत लें।
आतंकों के द्वन्द जीत लें॥ [२]
दो अभय सदय जय दीप - हमारे विद्या .....

जो अर्हन्त देव बतलाये।
जिनवाणी जिसके गुण गाये॥ [२]
वो गुरु के चरण सुदीप-हमारे विद्या .....

गुरु प्रभु जिसकी साँसे होई।
जले न जिससे आँचल कोई॥ [२]
वो जले आरति दीप - हमारे विद्या .....
जला दो .....

(तर्ज : मेरे मन में मंदिर में आन पधारो .....)

75.

उतार लइयौ आरति गुरु की, गुरु भगवान हमारे।
गुरु की आरति करकैं देखों, काम बनेंगे सारे॥

बड़भागी गुरु-दर्शन पाते, गुरु के चरण धुलाते।[२]
पूजन करते भजन सुनाते, गुरु की शरणा पाते॥[२]
गुरु की किरपा पाके देखो[२], हो जैं वारे-वारे ।
उतार लइयौ .....

भटक-भटक भव की गलियों में, दुख ही दुख हम पाते।[२]
बडे पुण्य से साँचे गुरुवर, हम सबको मिल पाते॥[२]
गुण गा लो ऐसे गुरुवर के[२], गुरुवर गाँव पधारे।
उतार लइयौ .....

आदिनाथ की गुरुवर छाया, महावीर से पुजते। [२]
''जियो और जीने दो'' कहते, तीर्थंकर से लगते॥[२]
चलते-फिरते तीरथ गुरुजी[२], तारण-तरण सहारे।
उतार लइयौ .....

हमें कछू नइँ चाने गुरुवर, बस हमखों अपना लो।[२]
भवसागर में डूबी नैय्या, हाथ लगा तिरवा दो॥[२]
मुस्का कैं मंजूरी दे दो[२], खुल जैं भाग्य हमारे।
उतार लइयौ .....

(तर्ज : उतार दइयौ भवसागर में, मेटो कष्ट हमारे.....)

76.

विद्या गुरुवर की, उतारे हम, झूम-झूम के आरति।[२]
निहारें हम झूम-झूम के मूर्ति॥[२]

थाल सजायी दीप जलाये, भाव-भक्ति से गायें गान।[२]
गुरुवर गाथा की .., जलायें हम मन में ज्ञान ज्योति॥[२]
विद्या गुरुवर .....

तीर्थंकर की गुरुवर छाया, भक्तों को लगते भगवान।[२]
आतम ज्ञाता जी ..., कहलाते हो साँचे तीरथ जी॥[२]
विद्या गुरुवर .....

पाँचों परमेष्ठी के दर्शन, चलते-फिरते आगम ज्ञान।[२]
पावन दाता जी..., बुराई सब तुमसे ही हारती॥[२]
विद्या गुरुवर.....

नाथ हमारी ओर निहारो, कृपा करो दीजे मुस्कान।[२]
गुरुवर विद्या जी..., पुकारें तुमको हम भारती॥[२]
विद्या गुरुवर.....

(तर्ज : छोटे बाबा रे, पधारो स्वामी मोरे अँगना रे .....)

79.

कर लइयौ गुरुवर की आरति-इतइँ आके॥[२]
कर लइयौ गुरुवर की आरति।[२]

तीर्थंकर से तीरथ पाये।[२]
गुरु - मूरत भक्तों को भाये॥[२]
विद्यागुरु शिव सारथी-इतइँ आके॥ कर .....

गुरुवर साँचे धरम खजाने।[२]
दानी आये रतन लुटाने॥[२]
लूटो गुरु की भारती-इतइँ आके॥ कर .....

गुरु की महिमा जाए न वरणी।[२]
जैसी करनी वैसी भरनी॥[२]
कृपा गुरु की तारती-इतइँ आके॥ कर .....

गुरु के जो जन बने पुजारी।[२]
उनने पायी मोक्ष सवारी॥[२]
गुरु से माया भी हारती-इतइँ आके॥ कर .....

कर लइयौ गुरुवर ....

(तर्ज : काट लेओ कर्मन के फंदा-इतइँ आके .....)

80.

नन्हीं-नन्हीं थालियाँ, नन्हें-नन्हें दीपक।[२]
नन्हीं-नन्हीं ज्योति जलाए कैं, गायें आरति के गीत ...॥[२]

पहली आरति आचार्य रूप की।[२]
भक्ति की गंगा बहाय कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं .....

दूजी आरति उपाध्याय रूप की।[२]
श्रद्धा के दीप जलाए कैं,-गायें आरति के गीत॥[२] नन्हीं .....

तीजी आरति मुनि-साधु रूप की।[२]
अपने उर में बसाए कैं, -गायें आरति के गीत॥[२] नन्हीं .....

चौथी आरति चिन्मय रूप की।[२]
अपना शीश झुकाये कैं,-गायें आरति के गीत॥[२] नन्हीं .....

पंचम आरति गुरु उपकार की।[२]
गुरु महिमा को गाए कैं, गायें आरति के गीत॥[२] नन्हीं .....

(तर्ज : नन्हीं-नन्हीं कलियाँ, नन्हों सो बगीचा .....)

83.

जगमग ज्योति, झिलमिल बाती, हो! गुरु की कर लो आरतिया।[२]
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥[२]
सभी पूर्णिमाओं में पूनम, शरद पूर्णिमा न्यारी। हो ..... शरद...
उसको जन्मे विद्या गुरु की, महिमा अतिशयकारी।
ओ स्वामी ! महिमा अतिशयकारी॥
निज के रसिया, गुरु मन वसिया, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥
देख आपकी कोमल काया, कलियाँ शरमा जाएँ। हो ..... कलियाँ ..
कठिन साधना तूफानी लख, तूफाँ घबरा जाएँ।
ओ स्वामी! तूफाँ घबरा जाएँ॥
त्यागे दूषण, जग के भूषण, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥
मधुर सरस हितकर गुरु-वाणी, आगम मर्म बताए। हो .....आगम..
मंत्र मुग्ध करतारी सुनके, मिश्री शरमा जाए।
ओ स्वामी! मिश्री शरमा जाए।
मन तेजस्वी, वच ओजस्वी, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥
गुरु-मुस्कान कीमती तोहफा, पुण्यवान ही पाते। हो ..... पुण्यवान..
जिसे देखकर खिले फूल भी, शरमा के झुक जाते।
ओ स्वामी! शरमा के झुक जाते॥
हैं सुखकारी, गुरु गम हारी, हो! गुरुकी कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥
जगमग ज्योति,

(तर्ज : गुण रत्नाकर, विद्यासागर .....)

84.

विद्यागुरु जी हैं सौभाग्य दाता।
आरति उतारें हम, गायें पुण्य गाथा॥ यही तो सुहाता।[२]

चमचम सजायी थाली, झिलमिल ये ज्योतियाँ।[२]
जगमग सँवारे हम तो, दीपों की बातियाँ॥[२]
भक्ति में झूमें हो[२], टेके ये माथा। यही तो सुहाता॥[२]
आरति .....

सूरज चमकना सीखा, सौरभ महकना।[२]
फूलों ने खिलना सीखा, खगों ने चहकना॥[२]
हमको सिखा दो, हो[२], मुक्ति की गाथा॥ यही तो सुहाता॥[२]
आरति .....

बिगड़े क्या गुरुवर तेरा ? बिगड़ी बनें हमरी।[२]
रत्नों से चमकें हम, पाके कृपा तुमरी॥[२]
मुस्का के हर लो, हो[२], मोह तम असाता। यही तो सुहाता॥[२]
आरति .....

(तर्ज : यशोमति मैय्या से बोले .....)

87.

गुरु भक्तों को गुरु मिले तो, दीप जले हैं।[२]
अरे! विद्यागुरु की आरति करके फूल खिलें हैं॥[२]
[गुरु भक्तों को गुरु मिले, दीप जले हैं, दीप जले हैं[२]]

गुरुवर विद्यासागर देखो, ज्ञान की ज्योति।[२]
लुटा रहे हैं दया, धर्म के हीरे मोती॥[२]
गुरु कृपा से गुरुवर के सान्निध्य मिले हैं।
अरे! विद्यागुरु....

चलते फिरते तीरथ गुरुजी, हैं भाग्योदय।[२]
सिद्धोदय सर्वोदय गुरु जी रहे दयोदय॥[२]
पुण्योदय से-शिवगामी गुरु-चरण मिले हैं।
अरे! विद्यागुरु....

हम पर भी गुरुवर जी कृपा अब तो कर दो।[२]
मुस्का के भक्तों की झोली, अब तो भर दो॥[२]
गुरु - छइयाँ से मोह पाप अज्ञान टले हैं।
अरे! विद्यागुरु....
गुरुभक्तों को .....
गुरु भक्तों को गुरु मिले हैं, दीप जले हैं-दीप जले हैं।[२]

(तर्ज : जंगल-जंगल बात चली है, पता चला है)

88.

तेरी खूब जली है ज्योति गुरु, मेरे मन का तुम अज्ञान हर लो।[२]
करूँ आरति मैं तो तेरी[२], तुम विद्या ज्योति प्रदान कर दो॥[२]

जो ज्योति सूरज की होती, वो ज्योति कभी मैं नहीं चाहूँ।[२]
चमक चाँद तारों की न चाहूँ, जगमग ज्योति भी नहीं चाहूँ॥[२]
क्या चाहूँ गुरु से, गुरु से, गुरु से।
जो आतम घट में प्रकाश भरे, वो अन्तर ज्योति प्रदान कर दो॥
तेरी खूब .....

हीरा मोती सोना चाँदी, रत्नों का भण्डार न चाहूँ।[२]
छम-छम घुँघरू, सुमणि मुकुट या, चमचम ग्रीवा हार न चाहूँ॥[२]
क्या चाहूँ गुरु से, गुरु से, गुरु से।
जो मुक्ति पथ आलोक भरे, वो रत्नत्रय ज्योति प्रदान कर दो॥
तेरी खूब .....

इन्द्रों की जो अतुल सम्पदा, दिव्य अलौकिक वो नहिं चाहूँ।[२]
चक्री, वैभव, निधि रतन या, कामदेव सा रूप नहिं चाहूँ॥[२]
क्या चाहूँ गुरु से, गुरु से, गुरु से।
जो मोक्ष महल का वैभव दे, वो भक्ति ज्योति प्रदान कर दो॥

तेरी खूब जली .....

(तर्ज : तेरे पाँच हुये कल्याण प्रभो .....)

91.

कितनी प्यारी ज्योति तुम्हारी, ऐसी जला दो ज्योति हमारी।
तेरे दरश की लगन से, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥ २

विद्या के तुम रहे खजाने, हम तो आए तुम्हें मनाने।२
सुन लो अरज हमारी, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥

मन मन्दिर में भरो उजाला, भव कानन का करो किनारा।२
अतिशय ज्योति तुम्हारी, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥

मन वीणा के तार तुम्हीं हो, हमरी तो आवाज तुम्हीं हो।२
तुम सुर ताल हमारी, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥

ब्रह्मा विष्णु महेश तुम्हीं हो, आदि वीर परमेश तुम्हीं हो।२
तेरे हम भक्त पुजारी, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥

हमको कभी न आप भुलाना, चरणों से ना दूर भगाना।२
दे दो मोक्ष सवारी, लेके हाथों में दीपक।
हमने आरति उतारी॥

कितनी प्यारी .....

(तर्ज : कितना प्यारा तेरा द्वारा)

92.

जगमग जलाके जोत सिर नायें।२
आरति गुरुदेव की हम गायें॥२

ज्ञान का दीया अद्‌भुत दिया।
और श्रद्धा की ज्योत निराली॥ २
ऐसा हो आलोक जिसी से।
दिवस, दशहरा, रात दिवाली॥
विद्या की ज्योति अब हम पाएँ॥
आरति गुरु.....

विद्या-गुरु का दीप निराला।
सब दोषों से दूर हैं नीका॥ २
जिसके आगे सूरज चन्दा।
ताराओं का दल है फीका।
त्रयलोक काल हाथ में दिख जायें॥
आरति गुरु.....

सूरज जैसा हमें न तपना।
चन्दा तारे हमें न बनना। २
गुरु चरणों में लघु दीपक बन।
जलने की है नेक तमन्ना॥
चरणों की छाँव में हम रम जायें॥
आरति गुरु.....

जगमग.....

(तर्ज : अपनी पनाह में हमें रखना .....)

95.

तुम तो बने ज्ञान ज्योति, हमरी कब जलाओगे।[२]
आरति उतारें हम तुम, तिमिर कब नशाओगे॥[२]

विद्या की रोशनी ही, हरती अँधेरे सारे।[२]
हमरे मन के मंदिर में, दीप कब जलाओगे॥[२]
तुम तो .....

अपने लिये आपने तो, बंधनों को तोड़ दिया।[२]
अंधकार मोह पाप का, हमरा कब मिटाओगे॥[२]
तुम तो .....

दिव्य सूर्य तुम, तुमसे,-प्रेम पुष्प खिलते हैं।[२]
हमरे मन की बगिया में, फूल कब खिलाओगे॥[२]
तुम तो .....

सारे भक्तों को तुमने, दान दिया मुँह माँगा।[२]
हमारी प्रार्थना सुनके, कब मुस्कुराओगे॥[२]
तुम तो .....

(तर्ज : तुम तो बने वीतरागी .....)

96.

हम घोर अँधेरे में, गुरु ज्ञान किरण देना।
हम आरति करते हैं, हमें अपनी शरण लेना॥

विद्या गुरु सूरज हो, दुनियाँ रोशन तुमसे।
हमको भी चमकाओ, क्यों रूठ गए हमसे॥ [२]
तुम रत्नों के भण्डार, बस तीन रतन देना।
हम आरति .....

हम जग के दल-दल में, आमूल चूल डूबे।
क्या ज्ञान ध्यान जाने ? क्या हित के मनसूबे॥ [२]
गुरु हमको थामो तुम, आशीष चरण देना।
हम आरति .....

कहीं भोग आँधियाँ हैं, कहीं पापों के तूफान।
ऐसे में श्रद्धा का, दीपक हमरा नादान॥ [२]
तुम कवच ढाल तलवार, गुरु पद रक्षण देना।
हम आरति .....

हम घोर .....

(तर्ज : जब कोई नहीं आता .....)

99.

जोत जलाते ज्ञान की गुरु उजयारी।[२]
आज उतारें आरति मिल नर-नारी ॥[२]

कोई कंगाल फकीरा, या ज्ञानी कोई अमीरा ।
जो द्वार तुम्हारे आते, हरते उनकी भव पीड़ा ॥
सभी के उपकारी। आज .....

जिसने भी मन में धारा, गुरु -ज्ञान महा सुखकारा।
वो दिव्य बने ना कैसे?, जिसने गुरुनाम पुकारा॥
गुरुमहिमा न्यारी। आज .....

हमको गुरुदेव निहारो, नैय्या भव पार उतारो।
मन के मन्दिर में वस के, रोशन कर हमें सँवारों॥
रोज हो दीवाली। आज .....

जोत जलाने ....

(तर्ज : भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली .....)

100.

गुरुवर की हो रही जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२]
ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ॥
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ।
मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ॥
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी।
सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी।
ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो॥
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी।
अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कै 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों .....)